(अव्यक्त इशारे)

मधुरता का गुण धारण कर मधुसूदन का नाम बाला करो

1) मधुरता ऐसी चीज़ है जिसकी धारणा से सदा हर्षित रह सकते हो और दूसरों को भी कर सकते हो। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान बनता है, और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला कर सकते हो। मधुरता रूपी मधु जिनके पास है उन्हें हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। उनके मस्तक पर सफलता का सितारा चमकता रहता है।

2) जो रूहानियत के रंग में सदा रंगे हुए रहते हैं उनमें मधुरता का गुण स्वतः आ जाता है, जो अपनी वा दूसरों की बीती को नहीं देखते वह सरलचित हो जाते हैं। सरलचित आत्माओं में मधुरता का गुण नेचुरल होता है। उनके नयनों से, मुख से और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है।

3) शक्तियों के चित्रों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण दिखाते हैं। सहनशीलता से सरलता वा मधुरता स्वतः आ जाती है। अभी इन दोनों गुणों को समान बनाना है। जितना ज्वाला रूप उतना शीतलता का रूप। सूरत शीतलता की और कर्तव्य ज्वाला का हो। वृत्ति, वाणी और कर्म में सदा मधुरता गुण हो।

4) ईश्वरीय परिवार में आई हुई हर आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है। अपनी विशेषता को जानकर उन्हें कार्य में लगाओ। मधुरता का गुण, स्नेह का गुण जो भी स्वयं में हैं उसे कार्य में लगाओ तो दूसरे सब गुण सहज आते जायेंगे। जैसे लोहा पारस से लगकर पारस बन जाता है वैसे आपका संग कडुवे को भी मीठा बना दे।

5) आप बच्चों के जीवन में विशेष दो धारणायें जरूर होनी चाहिए 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। वाचा में अगर सत्यता और मधुरता है तो वाणी की मार्क्स जमा होती हैं।

6) आपके शब्दों में मधुरता हो लेकिन अन्दर समाई हुई अथॉरिटी हो, शब्द रहमदिल की भावना के हो। आप जो बोलते हो वही स्वरूप में हो। नम्रता, स्नेह, मधुरता, सत्यता आदि गुण जब जीवन में धारण होंगे तब बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा कर सकेंगे।

7) आपका एक एक बोल, बोल नहीं लेकिन मोती है। ऐसा लगे जैसे मोतियों की वर्षा हो रही है, इसको कहा जाता है मधुरता। ऐसा बोल बोलो जो सुनने वाले सोचें कि ऐसा बोल हम भी बोलेंगे। सबको सुनकर सीखने की, फालो करने की प्रेरणा मिले। जो भी बोल निकलें वह ऐसे हों जो कोई टेप करके फिर रिपीट करके सुने।

8) आपके मधुरता के बोल, मधुर बोल के वायब्रेशन स्वत: ही सबको अपनी ओर आकर्षित करेंगे। आपका हर बोल, हर मंसा का संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। हर

एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव हो तो संगठन में एकता आ जायेगी। मतभेद खत्म हो जायेंगे।

9) कई बच्चे कहते हैं मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। लेकिन आप अपने निजी स्व के भाव (आत्मिक भाव) में रहो तो यह देहभान वाला स्वभाव स्वत: परिवर्तन हो जायेगा। आपके मधुर बोल दूसरों को भी खुश करते और स्वयं को भी खुश रखते। आपकी सदा मीठी दृष्टि, मीठे बोल, मीठे कर्म हो। जो भी सामने आये उसे दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल लो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उसकी सृष्टि को बदल लेंगे।

10) मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। बाप के दो मधुर बोल से आप भी परिवर्तन हुए हो। मीठे बच्चे तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो, इन्हीं दो मधुर बोल और मीठी दृष्टि ने आपकी जीवन बदल दी। तो ऐसी मधुरता धारण कर औरों को भी मधुर बनाओ।

11) मधुरता की सौगात सदा साथ रखना। सदा मीठा रहना और मीठा बनाना। जैसे मकरसंक्राति के यादगार में तिल के साथ मीठा मिलाकर खाते हैं, यह भी संगठन की शक्ति दिखाई है। तिल आत्मा के बिन्दू स्वरूप का और मिठाई मधुरता का, तो जब आप आत्मिक स्थिति में स्थित रह, मधुरता की मिठाई खाते और खिलाते हो तो संगठन एक हो जाता है।

12) आपके संकल्पों में बोल वा कर्म में मधुरता हो तो मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार करा सकते हो। बापदादा भी रोज़ बच्चों को कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाबा'। तो यह रोज़ का मधुर बोल मधुर बना देता है। यह मधुरता ही महानता है।

13) जैसे 'वाह मीठा बाबा' कहने से मुख मीठा हो जाता है क्योंकि प्राप्ति होती है। ऐसे हर ब्राह्मण आत्मा कोई भी ब्राह्मण का नाम लेते ही खुश हो जाए क्योंकि आप सभी भी बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषता से एक दो के सहयोगी साथी बन उन्नति को प्राप्त करते हो। हर एक आत्मा अपनी प्राप्त विशेषताओं से आपस में खुशी की लेन-देन करते भी हो और आगे भी सदा करते रहना।

14) जैसे ब्रह्मा बाप ने सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता वही कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते - '"बाबा तो बाबा है!" इसको कहा जाता है। सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना। तो कदम पर कदम रखना माना फालो फादर करना अर्थात् बाप समान बनना।

15) जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले सेवा के निमित्त भल अलग-अलग स्थानों पर रहते हो लेकिन मन तो

मधुबन में रहता है ना। मधुबन अर्थात् मधुरता सम्पन्न। कभी बच्चों पर या कार्य व्यवहार में आते आपस में क्रोध तो नहीं करते हो? कोई कैसा भी हो, अन्जान बच्चा हो या बड़ा हो लेकिन ज्ञान से तो उस समय अन्जान है ना! अन्जान के ऊपर कभी क्रोध नहीं किया जाता, रहम किया जाता है।

16) रोज़ चेक करो कि आज मन्सा या वाचा में श्रेष्ठता की नवीनता कितनी लाई? मन्सा में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रहे, बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता रहे। ब्राह्मण आत्माओं के बोल साधारण बोल नहीं हो सकते। मधुबन और मधुबन का बाबा सदा साथ रहे तो मधुरता का अनुभव होता रहेगा।

17) मधुरता की मिठाई से स्वयं का मुख मीठा करते रहना और मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा दूसरों का भी मुख मीठा कराते रहना। बापदादा आप बच्चों के हर बोल में मधुरता, विशेषता देखने चाहते हैं, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं।

18) बापदादा ने देखा कि हर बच्चे की नेचर तो अपनी-अपनी है, लेकिन सर्व बातों में, सम्बन्ध में, मन्सा में विजयी और सफल, वाणी में मधुरता तभी आ सकती है जब नेचर इज़ी हो | अलबेली नेचर नहीं। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देना। इज़ी अर्थात् मिलनसार।

19) चेक करो कि हर कर्मेन्द्रिय मुझ राजा के आर्डर प्रमाण चलती है? ऑर्डर करें मनमनाभव और मन जाये निगेटिव और वेस्ट थाट्स में, ऑर्डर करें मधुरता स्वरूप बनना है और समस्या व परिस्थिति अनुसार सूक्ष्म रूप में भी आवेश वा चिड़चिड़ापन आ रहा है, तो क्या यह ऑर्डर प्रमाण है? लक्ष्य रहे मुझे ही मोल्ड होना है। मुझे ही मरना है।

20) आपके चेहरे पर एक तो सदा रूहानियत की मुस्कराहट हो, दूसरा - मुख में सदा मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की गिफ्ट दे दो। और कुछ नहीं तो दो मीठे बोल की गिफ्ट भी देना जरूर, खाली हाथ कोई न जाये।

21) एक दो का मुख मीठा कराने के साथ आपका मुखड़ा (चेहरा) भी मीठा हो। आपके पास इतनी मधुरता जमा हो, जो बांटो तो भी भरपूर रहो और इस खजाने को तो जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा, कम नहीं होगा। अगर कोई ज्ञान सुनने वाला नहीं है तो भी आप मीठी शक्तिशाली दृष्टि देना।

22) आपका हर कर्म गुण सम्पन्न हो, जिस समय जिस गुण की आवश्यकता है वह गुण चेहरे, चलन में इमर्ज दिखाई दे। मानों कर्म के समय सरलता के गुण की, मधुरता की आवश्यकता है, चाहे बोल में, चाहे कर्म में अगर सरलता, मधुरता के बजाए थोड़ा भी आवेशता या थकावट के कारण बोल मधुर नहीं है, चेहरा मधुर नहीं है, सीरियस है तो गुण

सम्पन्न तो नहीं कहेंगे ना! कैसे भी सरकमस्टॉन्स हो लेकिन मेरा जो गुण है, वह इमर्ज होना चाहिए।

23) आपका मन्सा संकल्प और वाणी अर्थात् बोल और सम्बन्ध- सम्पर्क सदा मीठा, मधुरता सम्पन्न अर्थात् महान हो क्योंकि वर्तमान समय लोग प्रैक्टिकल लाइफ देखने चाहते हैं। वाणी की सेवा से प्रभावित हो नज़दीक तो आते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल मधुरता, महानता, श्रेष्ठ भावना, चलन और चेहरे को देख स्वयं भी परिवर्तन के लिए प्रेरणा लेंगे। समय प्रमाण आप सबको चेहरे और चलन से सेवा करनी पड़ेगी।

24) आप सबके मस्तक से लाइट का प्रकाश अनुभव हो, नयनों से रूहानियत की शक्ति अनुभव हो। मुख से, चेहरे से मधुरता, मुस्कुराता चेहरा अनुभव हो, इससे ही बापदादा की प्रत्यक्षता वा कार्य की प्रत्यक्षता होगी। तो अभी ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो, एक दो को सहयोग दो, आगे बढ़ाओ। कमजोर को सहारा दो। ऐसा संगठन बनाओ।

25) आप ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है - सर्वस्व त्यागी। इस त्याग से सरलता, मधुरता और सहनशीलता का गुण सहज आ जाता है। अगर सरलता नहीं तो मधुरता भी नहीं आ सकती। एक दो में स्नेही बनना है तो पहले देह सहित सर्वस्व त्यागी बनो। नॉलेजफुल के साथ सरल और मधुर स्वभाव हो इसे ही कहते हैं बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन।

26) जीवन में सरलता वा मधुरता का गुण तभी आयेगा जब आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर न हो। स्तुति और निंदा दो शब्द हैं। जो कर्म करते हो अगर उनके फल की इच्छा वा लोभ रहता है तो स्थिति एकरस नहीं रह सकती। कईयों की स्थिति का आधार स्तुति है। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है। अगर निंदा होती है तो धनी को भूल निधन के बन जाते हैं इसलिए स्तुति के आधार पर स्थिति नहीं रखना।

27) अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता और मधुरता को धारण करो। फिर देखो सर्विस वा कर्तव्य की सफलता कितनी श्रेष्ठ होती है। अभी स्मृति और वाणी दोनों ही प्लेन हो, कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लेन हो जायेंगे तो फिर प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। फिर सफलता प्लेन (एरोप्लेन) की माफिक उड़ेगी।

28) देवताओं के जो चित्र बनाते हैं, उनकी सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। फीचर्स में सरलता जिसको आप भोलापन कहते हो। जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मन्सा में भी सरल, वाचा में भी सरल, , कर्म में भी सरल होगा। यह सरलता का गुण ही मधुरता का आधार है, इससे ही बापदादा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

29) बेहद का इतना बड़ा ब्राह्मण परिवार देख-देख कर कितनी खुशी होती है। यह कितना अच्छा परिवार है। ऐसे लगता है जैसे हम मिले हुए ही हैं। ऐसे ही मिलते रहेंगे। जहाँ देखो वहाँ कितनी मधुरता है। सभी मेरा बाबा, मेरा बाबा कह कितना मुस्करा रहे हैं। पूरे कल्प में संगम पर ही ऐसा परिवार मिलता है, तो आपस में एक दो की विशेषता देखते, दिलखुश मिठाई खाते, खिलाते मधुरता सम्पन्न व्यवहार करो, इससे सब विघ्न सहज खत्म हो जायेंगे।